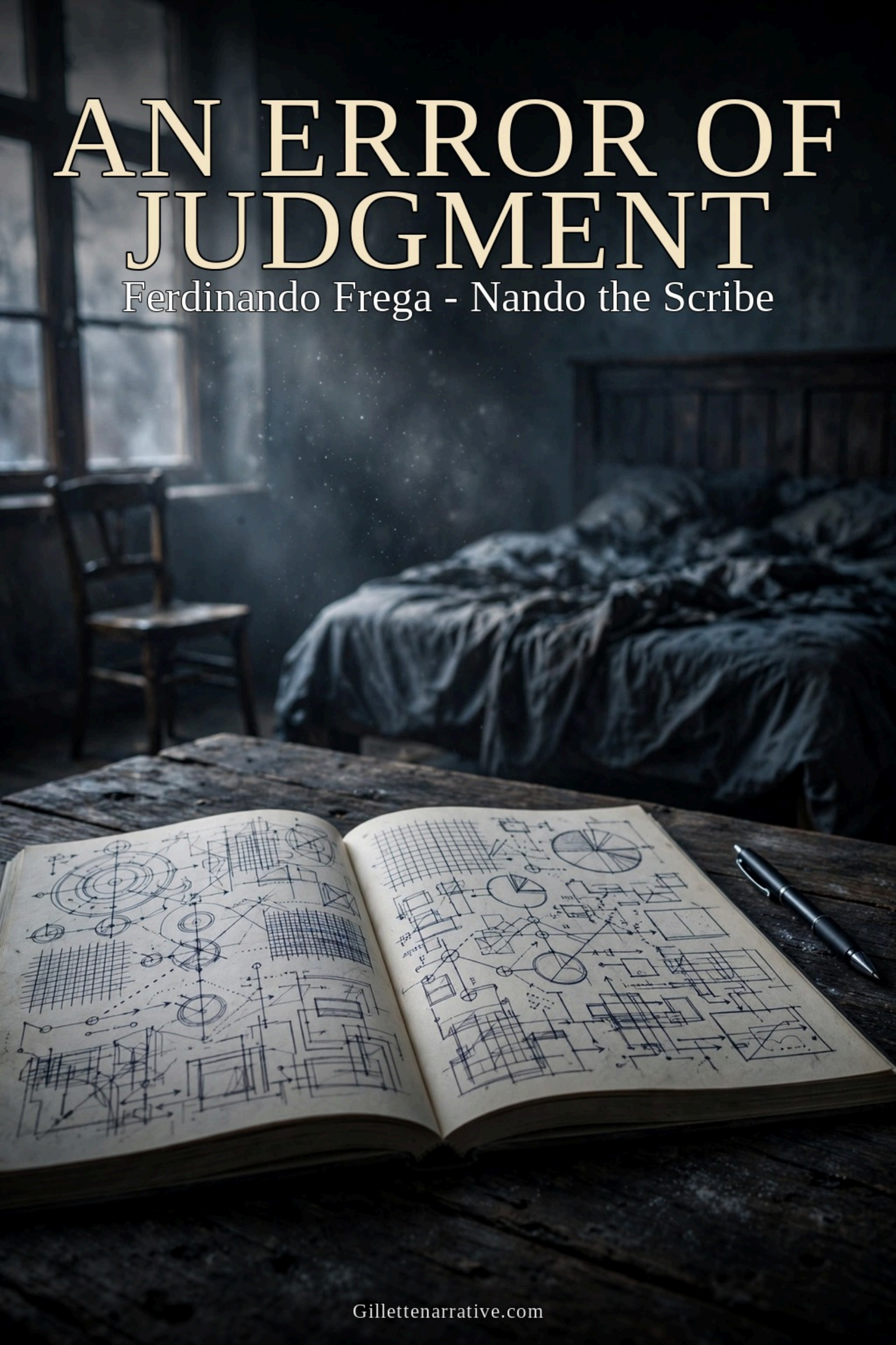

AN ERROR OF JUDGMENT
Ferdinando Frega - Nando the Scribe
Gillettenarrative.com

जिलेट: परख की एक भूल

जिलेट नैरेटिव — ब्लेड निबंध

जब आदमी इकसठ का होता है और ख़ुद को सचमुच अकेला पाता है, तो वह अब अपनी यादों के बीच नहीं जीता। वह अपनी ग़लतियों के बीच जीता है।

यादें बेज़रर होती हैं। वे अब आपको चोट नहीं पहुँचा सकतीं। ग़लतियाँ अलग हैं। ग़लतियाँ आपसे पहले जाग जाती हैं। वे पलंग के किनारे बैठी आपकी आँखें खुलने का इंतज़ार करती हैं। वे उम्र की वफ़ादार साथी हैं, क्योंकि वही इकलौती चीज़ें हैं जिन पर आप दोबारा मोलभाव नहीं कर सकते।

अगस्त की उस सुबह, मैंने ख़ुद को दक्षिणी इटली की उस पुरानी रवायत के बारे में सोचते पाया जिसे बंदूक़ की नोक वाली शादी कहा जाता है।

1940 और 1950 के दशकों के गाँवों में, दो नौजवान उस लापरवाही से प्यार में पड़ जाते जो सिर्फ़ जवानों के हिस्से आती है। वे एक-दूसरे को चाहते, एक-दूसरे पर भरोसा करते, और नतीजों के बारे में कभी न सोचते। फिर नतीजे आ ही जाते। कभी एक बच्चा। कभी दो। कभी तीन।

परिवार हक़ीक़त को देखते और एक व्यावहारिक हल चुन लेते।
इसलिए नहीं कि वे रोशन-ख़याल थे।
इसलिए नहीं कि वे रूमानी थे।
इसलिए कि बदनामी शादी से महँगी पड़ती थी।
दोनों प्रेमियों को वेदी की ओर धकेल दिया जाता, ज़िम्मेदारी का बपतिस्मा दे दिया जाता, और समाज में छोड़ दिया जाता, बच्चे, फ़र्ज़, और एक ऐसा भविष्य ढोते हुए जिसकी उन्होंने योजना नहीं बनाई थी पर जिसे अब बनाना था।

जब परिवार रिश्ते के ख़िलाफ़ होते, तो एक और हल था।

fuitina।
फ़रारी।
दो नौजवान, एक साथ ग़ायब होते हुए, यह एलान करने के लिए कि रज़ामंदी अब बेमानी हो चुकी है।

संदेश सीधा था:

हम एक-दूसरे के हैं। जब बन पड़े, आ मिलना।

आख़िरकार सब लौट आते। परिवार हमेशा लौटते हैं। माँ-बाप उन्हें माफ़ कर देते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं। दादा-दादी, नाना-नानी माफ़ कर देते हैं क्योंकि नाती-पोते दिल का हर पिछला क़ानून पलट देते हैं।

पर उस सुबह मैं जवान जोड़ों के बारे में नहीं सोच रहा था।

मैं अपने बारे में सोच रहा था।

बरसों से, मेरी निजी कसरत बन गई थी ग़लतियों का बहीखाता।

ग़लत फ़ैसले।

ग़लत ख़ामोशी।

ग़लत वफ़ादारी।

ग़लत उम्मीदें।

और उन जवान प्रेमियों के उलट, मेरा इंतज़ार कोई भरपाई वाली शादी नहीं कर रही थी। कोई गाँव का पादरी नहीं। कोई पारिवारिक पंचायत नहीं। कोई सामाजिक नुस्ख़ा नहीं जो हिसाब दुरुस्त कर सके।

तब मुझे एहसास हुआ कि मेरा अपना fuitina चालीस साल चला था।

पैंसठ देश।

चार दशक।

महाद्वीपों के आर-पार एक अकेली फ़रारी।

सवाल अब यह नहीं था कि मैं भागा था या नहीं।

सवाल था:

आख़िर मैं भागा किस चीज़ से था?

14 अगस्त 2026 को, जवाब आख़िरकार आ गया।

यह जानना काफ़ी नहीं था कि क्या हुआ।

यह समझना ज़रूरी हो गया कि क्यों हुआ।

समझदारी और तकलीफ़ के बीच का फ़र्क़ अक्सर एक छूटी हुई वजह से ज़्यादा कुछ नहीं होता।

और अचानक सब साफ़ हो गया।

यह धोखा नहीं था।

यह साज़िश नहीं थी।

यह नियति भी नहीं थी।

यह परख की एक भूल थी।

परख की एक शानदार, महँगी, उम्र भर की भूल।

मैं उसे सुधार नहीं सकता था।

मैं उसके ख़िलाफ़ अपील नहीं कर सकता था।

मैं नतीजे के लिए ज़िम्मेदार सर्वोच्च सत्ता से मोलभाव नहीं कर सकता था।

मेरी नियति।

हर उस नतीजे का मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिसका मैंने कभी सामना किया।

और पहली बार, मैंने उससे बहस करना छोड़ दिया।

फर्दिनांदो फ्रेगा